प्रसार शिक्षा निदेशालय

चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर

जनवरी 2018 महीने के दूसरे पखवाड़े में किये जाने वाले कृषि एवं पशुपालन कार्य

प्रसार शिक्षा निदेशालय, चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर ने जनवरी, 2018 माह के दूसरे पखवाड़े में किये जाने वाले मौसम पूर्वानुमान सम्बन्धित कृषि एवं पशुपालन कार्यों के बारे में निम्नलिखित सलाह दी है, जो किसानों को लाभप्रद साबित होगी।

गेहूँ

- गेहूँ में जहां खरपतवारों में 2-3 पत्तियां आ गई हों, यानि गेहूं की बिजाई के 30-35 दिन बाद तो उनके नियन्त्रण के लिए आईसोप्रोटूरान 75 डब्ल्यू.पी. नामक रसायन की 70 ग्रा. मात्रा 30 लीटर पानी में घोल कर प्रति कनाल की दर से छिड़काव करें। परन्तु जहां घास कुल के खरपतवारों के साथ चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की समस्या भी हो तो वहां आईसोप्रोटूरान (75 डब्ल्यू.पी.) 70 ग्रा.+2,4-डी (सोडियम 80 डब्ल्यू. पी.) 50 ग्रा. या क्लोडिनाफॉप की 24 ग्रा. (10 डब्ल्यू. पी.) या 16 ग्रा. (15 डब्ल्यू. पी.) प्रति कनाल व उसके पश्चात 2,4-डी (80 डब्ल्यू. पी.) की 50 ग्रा. प्रति कनाल का 30 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। 2,4-डी का छिड़काव क्लोडिनाफॉप के छिड़काव के 2-3 दिन के बाद करें । छिड़काव के लिए फलैटफैन नोजल का इस्तेमाल करें। छिड़काव से दो-तीन दिन पहले एक हल्की सिंचाई दें। छिड़काव आकाश साफ रहने पर करें।

सब्ज़ी उत्पादन

- निचले पर्वतीय क्षेत्रों में यह समय मूली की बिजाई के लिए काफी उपयुक्त है। बिजाई के लिए सुधरी किस्म पूसा हिमानी का चयन करें। बीजाई समतल खेतों में या मेढें बनाकर पंक्ति से पंक्ति या मेढ़ से मेढ़ 15-20 सैं.मी. की दूरी पर करें।
- मध्यवर्ती क्षेत्रों में आलू की बुआई के लिए सुधरी किस्मों जैसे कुफरी ज्योति, कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी गिरिराज व कुफरी हिमालिनी इत्यादि का चयन करें। बुआई के लिए स्वस्थ, रोग-रहित, साबुत या कटे हुए कन्द (वजन लगभग 30 ग्राम) जिनमें कम से कम 2 आंखें हों, का प्रयोग करें। बुआई से पहले कन्दों को डाईथेन एम-45 (25 ग्राम) तथा सिंगल सुपरफास्फेट (150 ग्रा.) प्रति 10 लीटर पानी) के घोल में 30 मिनट तक भिगोने के उपरान्त छाया में सुखाकर बुआई करें। आलू की बिजाई 15-20 सैं.मी. आलू से आलू तथा 45-60 सैं.मी. पंक्तियों की दूरी पर मेंढे बनाकर की जा सकती है। बुआई के समय 250 क्विंटल गोबर की खाद के अतिरिक्त 250 कि.ग्रा. इफ्को (12:32:16) मिश्रण खाद, 30 कि.ग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश तथा 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हेक्टेयर खेतों में डालें। आलू में खरपतवार नियन्त्रण के लिए एट्राजीन 50 डब्ल्यू. पी. 1.0 कि. ग्रा. या आइसोप्रोटूरान 75 डब्ल्यू. पी. 1.0 कि. ग्रा. या आक्सीफलोरफेन 23.5 ई. सी. 0.5 लीटर प्रति 750 लीटर पानी प्रति हेक्टेयर की दर से घोल बनाकर बीज अकुंरण से पहले खेतों में छिड़काव करें।
- इसके अतिरिक्त खेतों में लगी हुई सभी प्रकार की सब्जियों जैसे फूलगोभी, बन्दगोभी, गाँठगोभी, ब्रॉकली, चाईनीज-बन्दगोभी, पालक, मेथी, मटर, प्याज व लहसुन इत्यादि में निराई-गुड़ाई करें तथा नत्रजन (50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हेक्टेयर) खेतों में डालें।

फसल संरक्षण

- सरसों वर्गीय तिलहनी फसलों में तेले (एफिड) के अत्याधिक प्रकोप को नियन्त्रित करने के लिए डाईमिथोएट 30 ई. सी. (रोगर) या साईपरमिथरिन 10 ई.सी. (मात्रा 1 मि. ली. कीटनाशक प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें । छिड़काव के लिए एक बीघा क्षेत्र में कम से कम 60 लीटर घोल का प्रयोग करें तथा छिड़काव सुबह के समय न करें ताकि मधुमक्खी आदि लाभदायक कीटों को क्षति न हो।

---

* एक हैक्टेयर = 12.5 बीघा या 25 कनाल

- गेहूं में पीला रतुआ रोग के प्रबन्धन के लिये टिल्ट (प्रोपीकोनेजोल) 25 ई.सी. 1 मि.ली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- साग वाली फसलों में इन कीटनाशकों का छिड़काव न करें।
- आलू की फसल में भूमि में पाई जाने वाली सुँडियों की रोकथाम के लिए आलू की बिजाई से पहले खेत में क्वीनलफॉस 5 जी. (25 कि. ग्रा./है.) या 2 लीटर क्लोरपाईरीफॉस 25 कि. ग्रा. रेत में मिलाकर प्रति हेक्टेयर क्षेत्र के हिसाब से खेत में मिलाएं ।

पशुधन

- इस पखवाड़े में चारे की कमी को ध्यान में रखते हुए जई की पहली कटाई करें और कुतर कर सूखे चारे के साथ मिलाकर खिलाऐं। यदि सूखा चारा ही खिला रहे हो तो प्रत्येक पशु को प्रतिदिन 40 ग्राम खनिज लवण मिश्रण अवश्य खिलाऐं। बरसीम या लूसर्न को कुतर कर भूसे के साथ 10:1 के अनुपात में मिला कर खिलाऐं। ऐसा करने से पशु के पेट में अफारा की बीमारी नहीं होगी। पशुओं को पराली न खिलाऐं।
- छोटे बच्चों को कृमिरहित करने के लिए पिपराजीन 4 मि.ली. प्रति 10 कि.ग्रा. शरीर के भार की दर से पिलाऐं ।
- नवजात बच्चों को ठंडी हवाओं से बचाएं। इनके रहने के स्थान को बिछावन बिछाकर आराम देह बनाएं ताकि बच्चों को ठंड से होने वाली बिमारियों से बचाया जा सके। निमोनिया से बचाव के लिए नर्म व सूखे बिछौने का प्रबन्ध करें। इनके आवास गृह को ठंडी हवाओं से बचाऐं।
- राशन में ऊर्जा की मात्रा 5 प्रतिशत बढ़ा दें।
- मुर्गीशाला के तापमान को उचित अवस्था में बनाएं रखें। चूजों के रखने के स्थान को भी गर्म रखने का उचित प्रबन्ध करें। चूजे आरम्भ में ऊँचे तापमान पर पाले जाते हैं बाद में धीरे-धीरे तापमान को घटाना चाहिए। मछली तालाबों के पानी का स्तर 4-5 मीटर तक रखें ताकि पानी के नीचे की सतह कुछ गर्म बनी रहे। इस मौसम में खरगोशों की ऊन न उतारें और राशन में ऊर्जा की मात्रा बढ़ा दें। पशुपालन सम्बन्धी समस्याओं से निपटने के लिए स्थानीय पशुचिकित्सक की सेवाओं का लाभ उठाऐं।

किसान भाईयों एवं पशु पालकों से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र की भौगोलिक तथा पर्यावरण परिस्थितियों के अनुसार अधिक एवं अतिविशिष्ठ जानकारी हेतु नजदीक के कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क बनाए रखें । अधिक जानकारी के लिए कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र (एटिक) (01894-230395) से भी सम्पर्क कर सकते हैं ।

11/01/18

निदेशक
प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशलय, चौ. स. कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर द्वारा किसानों के हित में जारी ।

प्रतिलिपि :

1. सयुंक्त निदेशक (सूचना व जनसम्पर्क), चौ.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
2. मुख्य सम्पादक, गिरीराज प्रैस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला (हि.प्र.)
3. प्रभारी, यू.एन.एस., चौ.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय को बेवसाइट में अपलोड हेतू प्रेषित।

Endst No. QSD 3-57/DEE/Tech/CSKHPKV/-901-03 Dated : 11/1/18

* एक हैक्टेयर = 12.5 बीघा या 25 कनाल

I/C UNS